आदित्य की अगली फिल्म में नजर आयेंगी तान्या माणिकतला

अभिनेत्री तान्या माणिकतला अभिनेता राजकुमार राव के साथ फिल्मकार आदित्य निम्बालकर की अगली फिल्म में नजर आयेंगी. तान्या माणिकतला अब राजकुमार राव के साथ आदित्य निम्बालकर की आगामी फिल्म में नजर आने वाली हैं. यह फिल्म भारत की शिक्षा प्रणाली की वास्तविकताओं पर आधारित है.

आदित्य निम्बालकर द्वारा लिखी और निर्देशित यह फिल्म छात्रों और शिक्षकों के सामने आने वाले शैक्षणिक दबाव, भावनात्मक संघर्ष और तंत्रगत चुनौतियों को ईमानदारी से दिखाएगी. तान्या फिल्म में एक अहम किरदार निभा रही हैं, जो कहानी का भावनात्मक आधार है.

प्रोजेक्ट से जुड़े एक सूत्र ने बताया,यह फिल्म इसमें जुड़े सभी लोगों के लिए बेहद व्यक्तिगत है. आदित्य ने इस विषय को बहुत गहराई से समझा है और राजकुमार व तान्या दोनों ने अपने किरदारों में शानदार संवेदना डाली है. खासकर तान्या का किरदार उन कई युवाओं की आवाज़ को दर्शाता है जो इस जटिल और मांगलिक शिक्षा व्यवस्था में अपनी राह खोजने की कोशिश कर रहे हैं.

'ए सूटेबल बॉय', 'टूथ परी- व्हेन लव बाइट्स' और 'पी.आई. मीना' जैसी परियोजनाओं में अपने सशक्त और दिल को छू लेने वाले अभिनय के लिए जानी जाने वाली तान्या, एक बार फिर एक ऐसी कहानी का हिस्सा बनने जा रही हैं जो सशक्त कहानी कहने और सामाजिक प्रासंगिकता का संगम है. राजकुमार राव न केवल फिल्म के प्रमुख कलाकार हैं बल्कि इसके निर्माता भी हैं. जबकि निर्देशन की कमान आदित्य निम्बालकर संभाल रहे हैं.

भूषण कुमार प्रस्तुत 'नाच मेरी नागिन' रिलीज

टी-सीरीज़ और भूषण कुमार प्रस्तुत धमाकेदार गाना नाच मेरी नागिन रिलीज हो गया है. गाना नाच मेरी नागिन को तनिष्क बागची और नीलकमल ने कंपोज़ किया है, इसके बोल धीरज कुमार ने लिखे हैं और रैप को पैराडॉक्स ने लिखा और गाया है. इस गाने को अपनी दमदार आवाज़ मधुमति बागची ने दी है, जबकि वीडियो में नीलकमल, पैराडॉक्स और सौंदर्या शर्मा की एनर्जेटिक ट्रायो नज़र आएगी.

सौंदर्या शर्मा ने अपने उत्साह को साझा करते हुए कहा,लाल परी को दर्शकों से जो प्यार मिला, उसके बाद मैं एक नया अवतार पेश करना चाहती थी, और नाच मेरी नागिन के ज़रिए मैंने वही करने की कोशिश की है. यह एक बहुत ही पेप्पी डांस नंबर है, जिसके लिए मैंने काफी मेहनत और रिहर्सल की है. टी-सीरीज़ के साथ काम करना हमेशा एक शानदार अनुभव होता है. हमने इस गाने में ढेर सारी मस्ती, एनर्जी और एंटरटेनमेंट भरा है, और मैं इसे सबके साथ शेयर करने के लिए बहुत एक्साइटेड हूँ.

71 वर्ष की हुई अनुराधा पौडवाल

बॉलीवुड की मशहूर पार्श्वगायिका अनुराध पौडवाल आज 71 वर्ष की हो गयीं.

अनुराधा पौडवाल का जन्म 27 अक्टूबर 1954 को कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ करवार में हुआ. अनुराधा पौडवाल ने अपनी पढ़ाई मुंबई के जैवियर कॉलेज से की.बचपन से ही उनका रुझान संगीत की ओर था और वह पार्श्वगायिका बनने का सपना देखा करती थी.अपने सपनों को साकार करने के लिए उन्होंने बॉलीवुड का रुख किया.आरंभिक दिनों में उन्हें हालांकि काफी संघर्ष करना पड़ा. उन्होंने वर्ष 1973 में प्रदर्शित फिल्म अभिमान से अपने करियर की शुरूआत की. सुपरस्टार अमिताभ बच्चन और जया भादुड़ी की मुख्य भूमिका वाली इस फिल्म में उन्हें मशहूर संगीतकार सचिन देव बर्मन के निर्देशन में एक संस्कृत के श्लोक गाने का अवसर मिला जिससे अमिताभ बच्चन काफी प्रभावित हुये.

वर्ष 1974 में अनुराधा पौडवाल को मराठी फिल्म यशोदा में भी पार्श्वगायन करने का अवसर मिला.वर्ष 1976 में प्रदर्शित फिल्म कालीचरण में उनकी आवाज में एक बटा दो दो बटा चार उन दिनों बच्चों में काफी लोकप्रिय हुआ था. इस बीच अनुराधा ने आपबीती, उधार का सिंदूर, आदमी सड़क का, मैने जीना सीख लिया, जाने मन और दूरियां जैसी बी और सी ग्रेड वाली फिल्मों में पार्श्यगायन किया लेकिन इन फिल्मों से उन्हें कोई ख़ास फायदा नहीं पहुंचा.

लगभग सात वर्ष तक मायानगरी मुंबई में संघर्ष करने के बाद 1980 में जैकी श्रॉफ और मीनाक्षी शेषाद्रि अभिनीत फिल्म हीरो में लक्ष्मीकांत प्यारे लाल के संगीत निर्देशन में तू मेरा जानू है तू मेरा दिलवर है की सफलता के बाद अनुराध पौडवाल बतौर पार्श्वगायिका फिल्म जगत में कुछ हद तक अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो गयी.

सोनल चौहान होंगी 'मिर्जापुर : द फ़िल्म' का हिस्सा

बॉलीवुड अभिनेत्री सोनल चौहान ने अमेज़न प्राइम वीडियो की लोकप्रिय सीरीज़ मिर्जापुर के फिल्म वर्ज़न 'मिर्जापुर- द फ़िल्म' में अपनी एंट्री की आधिकारिक घोषणा कर दी है.

सोनल ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक्सेल एंटरटेनमेंट की ओर से मिले गिफ्ट हैम्पर और एक नोट की झलक शेयर की.नोट में लिखा था, प्रिय सोनल, हमें खुशी है कि आप 'मिर्जापुर' की टीम का हिस्सा बनी हैं. स्क्रीन पर आपका जादू देखने का इंतज़ार है.

इसी पर प्रतिक्रिया देते हुए सोनल ने कहा,अभी भी यकीन नहीं हो रहा... इतनी शानदार और गेम-चेंजिंग यात्रा का हिस्सा बनकर बेहद खुश हूं. मिर्जापुर- द फ़िल्म का हिस्सा बनना मेरे लिए बेहद रोमांचक है और मैं इंतज़ार नहीं कर सकती कि आप सब स्क्रीन पर क्या देखने वाले हैं.

'मिर्जापुर- द फ़िल्म' की घोषणा पिछले साल की गई थी. इस फिल्म में एक बार फिर दर्शकों को उनके पसंदीदा किरदार पंकज त्रिपाठी के रूप में कलीन भैया, अली फज़ल के रूप में गुड्डू पंडित, दिव्येंदु के रूप में मुन्ना त्रिपाठी और श्वेता त्रिपाठी के रूप में गोलू गुप्ता देखने को मिलेंगे.हालाँकि दिव्येंदु का किरदार सीज़न 2 में मारा गया था, लेकिन मेकर्स ने संकेत दिया है कि वह इस बहुप्रतीक्षित फिल्म में वापसी करेगा.

यह क्राइम थ्रिलर रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर के एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले बन रही है, जिसका निर्देशन गुरमीत सिंह कर रहे हैं. फिल्म में अभिषेक बनर्जी और जितेंद्र कुमार भी अहम भूमिकाओं में नज़र आएंगे.

जगद्धात्रीमें गीता त्यागी निभाएंगी रेखा का अहम किरदार

ज़ी टीवी अपना नया शो जगद्धात्री लेकर आ रहा है, जो उन मज़बूत महिलाओं की कहानी दिखाता है जो रोज़ अपनी जिंदगी में चुपचाप कई लड़ाइयां लड़ती हैं. इस शो में सोनाक्षी बत्रा जगद्धात्री और फ़मान हैदर शिवाय की भूमिका में नज़र आएंगे. कहानी एक ऐसी लड़की की है जो घर में सबकी बात मानती है और शांत रहती है, लेकिन जब अपराध से लड़ने की बात आती है, तो वही लड़की एक निडर अंडरकवर एजेंट बन जाती है.

अब इस दिलचस्प कहानी में एक नया चेहरा जुड़ गया है अभिनेत्री गीता त्यागी, जो निभा रही हैं रेखा, यानी जगद्धात्री की सौतेली मां का किरदार. रेखा का किरदार थोड़ा जटिल है वो ज़िम्मेदार भी है और अंदर से परेशान भी. वो घर की बड़ी है, सबका ख्याल रखती है, लेकिन जगद्धात्री के साथ उसका रिश्ता थोड़ा दूर और अनकहा सा है. उसकी कहानी घरों के उन रिश्तों को दिखाती है, जहाँ प्यार और मनमुटाव साथ-साथ चलते हैं.

अपने किरदार के बारे में गीता त्यागी कहती हैं, मैं रेखा का रोल निभा रही हूं, जो जगद्धात्री की सौतेली मां है. उसका जीवन उसके बीते फैसलों से बना है. वो पूरी तरह अच्छी या बुरी नहीं है बस एक इंसान है. कभी सख्त लगती है, तो कभी भावुक. मुझे इस किरदार की गहराई बहुत पसंद आई. रेखा असली लगती है क्योंकि उसमें अच्छाई और कमी, दोनों हैं. मुझे उम्मीद है दर्शक उसके और %जगद्धात्री% के रिश्ते को देखकर जुड़ाव महसूस करेंगे.

आयुष शर्मा ने की पैन-इंडिया फिल्म की घोषणा!

अभिनेता आयुष शर्मा ने अपने जन्मदिन के खास मौके पर घोषणा की है कि वह पैन-इंडिया प्रोडक्शन हाउस पीपल मीडिया फैक्ट्री के साथ एक बड़े और महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के लिए हाथ मिलाने जा रहे हैं.

यह फिल्म पूरे भारत में रिलीज़ की जाएगी. यह प्रसिद्ध प्रोडक्शन हाउस अब तक कई यादगार फिल्में बना चुका है.

आयुष शर्मा ने कहा , पीपल मीडया फैक्ट्री जैसे प्रोडक्शन हाउस के साथ काम करना मेरे लिए एक बड़ा सम्मान है. पिछले कुछ सालों से मैं इनके द्वारा बनाई गई फिल्में देख रहा हूं, और हर बार वह एक सिनेमाई अनुभव रहा है. मेरा मानना है कि यह उन कुछ प्रोडक्शन हाउस में से एक है जो भारतीय सिनेमा की सीमाओं को आगे बढ़ा रहा है. इस सफर की शुरुआत को लेकर मैं बेहद उत्साहित हूं.

इस बीच, आयुष अपनी आने वाली फिल्म माय पंजाबी निकाह की तैयारियों में जुटे हैं .यह एक हल्की-फुल्की, मज़ेदार और रिश्तों से भरी कहानी होगी. और अब इस नई फिल्म के साथ, आयुष शर्मा अपने करियर में दो मज़बूत और विविध प्रोजेक्ट जोड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हैं.

कलाकारों ने हैलोवीन लुक की प्रेरणा के बारे में बताया

जैसे-जैसे हैलोवीन करीब आ रहा है, डर, मस्ती और क्रिएटिविटी का माहौल बनना शुरू हो गया ! भूत, वैम्पायर और मशहूर फिल्मी किरदारों के रूप में तैयार होना इस त्योहार की सबसे बड़ी खासियत है. यह दिन लोगों को अपने अलग, रहस्यमयी और हटके अंदाज़ को दिखाने का मौका देता है. इस खास मौके पर एण्डटीवी के कलाकारों ने बताया कि अगर वे किसी हैलोवीन पार्टी में जाएं, तो कौन-सा डरावना लुक अपनाना पसंद करेंगे.

प्रियंवदा कांत, जो जल्द ही शो घरवाली पेड़वाली में लतिका के किरदार में नजर आएंगी, कहती हैं, अगर मैं किसी हैलोवीन पार्टी में जाऊं, तो अपनी किरदार लतिका को एक डरावना रूप देना चाहूंगी जैसे उसकी भूतिया झलक ! गीतांजलि मिश्रा, जो हप्पू की उलटन पलटन में राजेश का किरदार अदा कर रही हैं, ने कहा, मुझे हैलोवीन पर तैयार होना बहुत पसंद है! अगर मुझे कोई लुक चुनना हो, तो मैं या तो नन या वैम्पायर बनना पसंद करूंगी. दोनों ही लुक में रहस्यमय और डरावना एहसास होता है, जो हैलोवीन के मूड के लिए बिल्कुल परफेक्ट है. वैम्पायर लुक में खूबसूरती और ख़तरे का दिलचस्प मेल है, आसिफ शेख, उर्फ भाबीजी घर पर हैं के विभूति नारायण मिश्रा ने कहा, मुझे हमेशा अपने ऑन-स्क्रीन लुक्स के साथ एक्सपेरिमेंट करना पसंद रहा है.

द ताज स्टोरी का 'धम धड़क' गीत रिलीज

बॉलीवुड के जानेमाने चरित्र अभिनेता परेश रावल की आने वाली फिल्म द ताज स्टोरी का 'धम धड़क' गीत रिलीज हो गया है. तुषार अमरीश गोयल द्वारा लिखित और निर्देशित तथा स्वर्णिम ग्लोबल सर्विसेज प्रा. लि. और सीए सुरेश झा द्वारा प्रस्तुत 'द ताज स्टोरी', हर नए अपडेट के साथ दर्शकों के बीच ज़बरदस्त चर्चा का विषय बनती जा रही है. मेकर्स ने इस फिल्म का पहला गीत 'धम धड़क' रिलीज कर दिया है, जो कैलाश खेर की शक्तिशाली आवाज़ में फिल्म की कहानी से गहराई से जुड़ता है.राहुल देव नाथ द्वारा संगीतबद्ध इस गीत के बोल विक्रम चौधरी ने लिखे हैं. फिल्म द ताज स्टोरी में परेश रावल के साथ जाकिर हुसैन, अमृता खानविलकर, स्नेहा वाघ नामित दास जैसे दमदार कलाकार हैं.

कृषि जगत

पपीते के लिए खतरनाक हैं ये कीट और रोग

आमतौर पर पपीते की खेती करना एक आसान काम लगता है क्योंकि पपीते का पेड़ जगह नहीं घेरता और छोटी सी जगह में हो जाता है. देश में पपीते की खेती बड़े स्तर पर की जाती है. किसान पपीते की खेती करके बेहतर कमाई भी कर रहे हैं.

प्रमुख कीट और रोग

लाल मकड़ी- लक्षण- फल खुरदुरे और काले हो जाते हैं, पत्तियों पर पीली फफूंद पड़ जाती है.

बचाव- प्रभावित पत्तियों को हटाकर नष्ट कर दें और कीटनाशक का छिड़काव करें.

तना गलन- लक्षण- तने का ऊपरी छिलका पीला होकर गलने लगता है, जो धीरे-धीरे जड़ तक पहुंच जाता है पौधा सूख जाता है.

बचाव- पौधे के आसपास पानी जमा न होने दें.

डंपिंग ऑफ (आर्द्र गलन) लक्षण- पौधे जमीन की सतह के पास से गलकर मर जाते हैं.

बचाव- बुवाई से पहले बीजों का उपचार करें और कीटनाशक का छिड़काव करें.

लीफ कर्ल (पत्ती मोड़क) लक्षण- यह एक वायरस से होने वाला रोग है जो सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है. इसमें पत्तियां मुड़ जाती हैं और विकृत हो जाती हैं, फल छोटे और सूख जाते हैं.

बचाव- सफेद मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशक का छिड़काव करें और प्रभावित पौधों को हटा दें.

सरसों की बुआई का है सबसे सही समय

सरसों की गिनती भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में होती है और इसकी खेती मुख्य रूप से रबी सीजन में की जाती है. बुवाई का सबसे उपयुक्त समय अक्टूबर से नवंबर तक माना जाता है, जब तापमान 20 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच होता है. किसान धान की कटाई के बाद अपने खेतों में सरसों की बुवाई करके अच्छी कमाई कर सकते हैं.क्योंकि यह फसल भी बेहद मुनाफे वाली फसल है.

बीज की मात्रा और चयन

- एक हेक्टेयर खेत के लिए 2.5 से 3.5 किलो बीज की मात्रा पर्याप्त होती है. किसान हमेशा साफ, स्वस्थ और रोग-मुक्त प्रमाणित बीज का ही इस्तेमाल करें. अच्छी गुणवत्ता वाले बीज से अंकुरण बेहतर होता है और फसल रोगों से बची रहती है.

बुआई का सही समय- ICAR की मानें तो सरसों की बुआई का समय किस्म पर निर्भर करता है. सामान्य तौर पर इसकी बुआई सितंबर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के अंत तक करना सबसे अच्छा रहता है. अगर बुआई समय से पहले की जाए तो पौधे कमजोर रह जाते हैं. वहीं देर से बुआई करने पर ठंड और पाले का असर फसल पर पड़ सकता है. अच्छे अंकुरण के लिए बुआई के समय दिन का अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं होना चाहिए.

बुआई की विधि- सिंचित क्षेत्रों में कतार से कतार की दूरी 45 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर रखनी चाहिए. इस तरह की बुआई से पौधों को पर्याप्त धूप और हवा मिलती है, जिससे फसल तंदुरुस्त रहती है.

बीज उपचार की विधियां

कार्बेन्डाजिम (बविस्टिन) का इस्तेमाल 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से करें. इस दर से फसल पर लगने वाले कई फफूंदजनित रोगों को काफी हद तक कम किया जा सकता है. ट्राइकोडर्मा नामक फंगस का प्रयोग 6 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से करें. इससे जमीन में पाए जाने वाले कई हानिकारक रोगाणुओं का असर खत्म हो जाता है. स्पॉटेड कीट या पेंटेड बग से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड 70 ड्ढक्क का इस्तेमाल करें. इसे 7 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें.

पशुओं में बढ़ाता है दूध की गुणवत्ता साइलेज चारा

दूध और मांस उत्पादन बढ़ाने के लिए पशुपालकों को संतुलित और पोषक आहार देना जरूरी है. इसी क्रम में साइलेज एक बेहतर विकल्प बनकर उभरा है. साइलेज हरे चारे को किण्वन प्रक्रिया के जरिए संरक्षित करके बनाया जाता है. इसमें मौजूद लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया चारे को सुरक्षित रखते हैं और लंबे समय तक इसकी पोषण क्षमता को बनाए रखते हैं. यह चारा न केवल आसानी से पचता है, बल्कि पशुओं की दूध और मांस उत्पादन क्षमता को भी बढ़ाता है.

साइलेज बनाने की विधि- साइलेज बनाने के लिए सबसे पहले एअरोबिक साइलो तैयार करें. यह साइलो गड्ढे, बैग या प्लास्टिक शीट के रूप में हो सकता है. हरे चारे को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर साइलो में भरें. इसके बाद ट्रैक्टर या पैरों की मदद से चारे को अच्छी तरह दबाएं, ताकि उसमें से हवा पूरी तरह निकल जाए. जब हवा बाहर निकल जाएगी, तभी बैक्टीरिया सही तरीके से किण्वन प्रक्रिया कर पाएंगे.

लंबे समय तक रहता है सुरक्षित- साइलेज का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह लंबे समय तक सुरक्षित रहता है और मौसम की मार से प्रभावित नहीं होता. सामान्य हरा चारा जहां जल्दी खराब हो जाता है, वहीं साइलेज कई महीनों तक सुरक्षित रहता है.

कब और कैसे करें बीज उपचार-बुआई से ठीक पहले किसान जरूरी जैविक तत्वों से बीज उपचार करते हैं. एक बार बीज उपचारित हो जाए तो इसे तुरंत बोना चाहिए. अगर उपचारित बीज रखे छोड़ दिए तो इसकी प्रभावशीलता कम हो सकती है. अब बीज उपचार भी 2 तरह से किया जाता है- **जैविक विधि**-इस विधि में बीजों को उपचारित करने के लिए ट्राइकोडर्मा वीरिडी जैसी जैव कवकनाशी का इस्तेमाल किया जाता है. ये चीजें बीज में मिलाकर इसके बाद तुरंत बुवाई करना चाहिए. **रासायनिक विधि**-इस तरह से बीजों को उपचारित करने के लिए बीज के हिसाब से पहले निर्धारित मात्रा में फंगीसाइड या फिर कीटनाशक का घोल बनाया जाता है. फिर इस घोल से बीजों को उपचारित करके छाया में सुखाना होता है. फिर बुवाई की जाती है. अगर छोटे पैमाने पर बीज उपचार करना है तो घड़ा विधि से करें और अगर बड़े पैमाने पर करना है तो सीड ड्रेसर मशीन का इस्तेमाल कर सकते हैं.

क्या है उतेरा विधि?

उतेरा या पैरा खेती एक बहुत पुराना और असरदार तरीका है, जिससे किसान एक ही खेत में सालभर में एक से यादा फसलें उगा पाते हैं. इस तरीके में, धान की फसल कटने से 15-20 दिन पहले ही, खेसारी के बीजों को उस खड़े धान के खेत में छिड़क दिया जाता है. यह विधि खास तौर पर झारखंड, बिहार, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे रायों में अपनाई जाती है. इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि धान कटने के बाद खेत में जो नमी बची रहती है, नई फसल उसी नमी का इस्तेमाल करके उग जाती है. इससे फसल को अलग से सिंचाई की जरूरत लगभग नहीं पड़ती और सिंचाई का खर्चा बच जाता है.

खेसारी की ये नई किस्में अपनाएं- किसानों के लिए खेसारी की कई सुरक्षित और उन्नत किस्में मौजूद हैं, जो कम खतरे के साथ अच्छी पैदावार देती हैं. रतन किस्म 105-115 दिनों में पक जाती है. प्रतीक किस्म 110-115 दिनों में तैयार होती है. महातिवड़ा एक जल्दी पकने वाली किस्म है, जो 95-105 दिनों में तैयार होती है. निर्मल किस्म 105-110 दिनों तैयार होती है. वहीं, पूसा-110-115 दिनों में तैयार होती है.

खेत का चयन और बुआई का सही समय- उतेरा विधि से खेसारी की खेती के लिए, भारी मिट्टी वाली जमीन सबसे अच्छी मानी जाती है, क्योंकि यह मिट्टी लंबे समय तक नमी को पकड़कर रखती है. बुआई का सबसे सही समय धान की कटाई से 15-20 दिन पहले होता है, जब धान की बालियां पकने लगती हैं. कैलेंडर के हिसाब से, यह समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर के बीच पड़ता है. उतेरा विधि से छिड़काव कर देते हैं. अगर खेत में यादा पानी भरा है, तो उसे निकाल देना चाहिए, वरना बीज सड़ सकते हैं.

खाद और उर्वरक प्रबंधन

उतेरा विधि में फसल मुख्य रूप से खेत में बची हुई नमी और पहले से मौजूद उर्वरता पर ही उगती है, इसलिए इसे अलग से बहुत यादा खाद की जरूरत नहीं होती. फिर भी, अछी पैदावार सुनिश्चित करने के लिए प्रति एकड़ लगभग 8 किलो नाइट्रोजन, 20 किलो फास्फोरस, 12 किलो पोटाश और 8 किलो सल्फर की मात्रा का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है. इसके अलावा, फसल की सेहत और विकास को बढ़ावा देने के लिए दो बार पत्तों पर छिड़काव करना बहुत फायदेमंद होता है.